



नृत्य और संगीत का परस्पर सम्बन्ध

*¹डॉ. मृणाल प्रभाकरराव कडू

*¹सहयोगी प्राध्यापक, संगीत विभाग, श्री. शिवाजी कला वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय अकोट, सं.गा.बा.अमरावती युनिवर्सिटी, अमरावती, महाराष्ट्र, भारत।

सारांश

संगीत और नृत्य मानव संस्कृति के अभिन्न अंग हैं, जो भावनाओं और विचारों को अभिव्यक्त करने के मध्यम के रूप में कार्य करते हैं। ये दोनों कला रूप प्राचीन काल से ही समाज में मौजूद रहे हैं और मनोरंजन, अध्यात्मिक और सामाजिक संचार का एक महत्वपूर्ण साधन बने हुए हैं। नृत्य शरीर की लयबद्ध गतिविधि है, जो किसी संगीत या ध्वनी के साथ तालमेल बिठाकर प्रस्तुत किया जाता है। नृत्य और संगीत एक दूसरे के पूरक हैं। नृत्य संगीत के बिना अधूरा लगता है, और संगीत नृत्य के मध्यम से अधिक प्रभावशाली बनता है। दोनों का समन्वय धार्मिक अनुष्ठानों, उत्सवों, नाटकों और सांस्कृतिक प्रस्तुतियों में देखने को मिलता है। विभिन्न समाजों के सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित और प्रगत करने का मध्यम है। यह मानसिक स्वास्थ्य प्रदान करता है और शारीरिक रूप से सक्रिय रहने में मदद करता है।

मुख्य शब्द: सृजनात्मकता, शारीरिक गति, नर्तक, शारीरिक भाषा आदि।

प्रस्तावना

कला की कोई सामान्य परिभाषा नहीं है, लेकिन 'कला जो सुंदरता पैदा करती है' उसी को कला की एक मोटी परिभाषा के रूप में स्वीकार करने में कोई समस्या नहीं है। जो कुछ भी किया जाता है वह एक सौन्दर्यात्मक प्रभाव पैदा करता है, कल्याण की भावना पैदा करता है, मन को प्रसन्न करता है, इसे हम 'कला' कह सकते हैं। कला का निर्माण तब होता है जब एक कलाकार दर्शकों के लिए एक सुंदर और आनंददायक अनुभव बनाता है या जब वह दर्शकों के लिए एक भावनात्मक अनुभव प्रस्तुत करता है।

'नृत्य' ही एक ऐसी कला है जिसमें मूर्तिकला, चित्रकला, नाटक, साहित्य और गायन की ललित कलाएँ विभिन्न स्तरों पर विभिन्न तत्वों के साथ प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से परिलक्षित होती हैं। नृत्य आनंद की स्वाभाविक अभिव्यक्ति है। लोक नृत्य का जन्म आनंद व्यक्त करने, दिन भर की मेहनत के बाद शाम को एक साथ इकट्ठा होकर आराम करने और नाच-गाने से मनोरंजन करने के लिए हुआ था। नृत्य के माध्यम से हम अपनी भावनाओं को व्यक्त कर सकते हैं। इस नृत्य पर आगे के नियम लागू किए गए। जिस नृत्य शैली ने अपने चारों ओर विज्ञान और तकनीक का एक घेरा बना लिया, उसे शास्त्रीय नृत्य शैली के रूप में मान्यता दी गई। नृत्य भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग है।

पृष्ठभूमि

भारतीय शास्त्रीय कलाओं में नृत्य की एक लंबी परंपरा रही है। भरतमुनि द्वारा लिखित भारतीय नृत्य विज्ञान का प्राचीन ग्रन्थ नाट्यशास्त्र है, किन्तु प्रत्येक स्थान की संस्कृति, परम्परा, लोककला,

सामाजिकता के मेल से शास्त्रीय नृत्य परम्परा की विभिन्न धाराएँ निर्मित हुई। 'नृत्य' सृजनात्मकता की शक्ति है, देवी-देवताओं से, हजारों वर्षों से पुरुषों और महिलाओं की संपूर्ण कहानियों और कलात्मक अभिव्यक्तियों से।

एक व्यक्ति जो नृत्य में अपना करियर बनाना चाहता है, उसे नृत्य के इतिहास और पेशेवर पृष्ठभूमि को जानना आवश्यक है। नृत्य एक ललित कला है। नृत्य का अर्थ है नृत्य करना, इस धातु से नृत्य, नृत्य, नर्तन आदि। शब्द बन गया। नृत्य 64 कलाओं में से एक है। भारत में दो सौ से अधिक लोकनृत्यों का अभ्यास किया जाता है। दस शास्त्रीय नृत्य शैलियों की जड़ें भारत में हैं। इनमें कथक, मणिपुरी, भरतनाट्यम और कथकली प्रमुख शास्त्रीय नृत्य हैं। कुचिपुड़ी, ओडिसी, मोहिनीअट्टम इसकी बहनें हैं। अंतरिक्ष, समय और ऊर्जा के सिद्धांत जो सभी कलाओं के मूल में हैं, साथ ही ऋतुओं के चक्र, दिन और रात, यानी पुनरावृत्ति की अवधारणा, 'लयत्व' की तुलना में गायन, खेल और नृत्य में मुख्य रूप से देखा जाता है। अन्य कला। नृत्य कला में 'गायन' कला का विशेष महत्व है। गायन और वादन नृत्य कला के अभिन्न अंग हैं। भरतमुनि ने नाट्यशास्त्र में संगीत को इस प्रकार परिभाषित किया है-गीत, वाद्य और नृत्य, संगीत की त्रयी।

उत्पत्ति और परंपरा

भारतीय कलाकार की उत्पत्ति सीधे वैदिक काल में जाती है। वगैरह। एस। ईसा पूर्व 5000 वर्ष पुरानी सिंधु संस्कृति में नृत्य का भी स्थान है। इसका प्रमाण हड़प्पा के विशेषशा नर्तक और मोहनजोदड़ो के नर्तक की प्रतिकृति से मिलता है। दक्षिण की संस्कृति में शंकर और उत्तर में

श्रीकृष्ण को सर्वश्रेष्ठ नर्तक और उनके आराध्य देवता माना जाता है। शंकर को 'नटराज' और श्रीकृष्ण को 'नटवर' कहा जाता है। साथ ही संगीत की परिभाषा को गीत, वाद्य यंत्र और नृत्य की त्रिमूर्ति माना जाता है। यही कारण है कि रंगमंच और संगीत के सभी प्राचीन ग्रंथों में नृत्य के बारे में विचार और व्याख्याएँ हैं। नाट्यशास्त्र ग्रंथ के प्रथम अध्याय में नाट्य की उत्पत्ति की कथा है। भगवान इंद्र के अनुरोध पर, भगवान ब्रह्मा ने चारों वेदों का सार लिया और पांचवें नाट्यवेद, निर्मिला की रचना की, और इसे भरतमुनि को दिया और इसके आधार पर एक नाट्य प्रयोग का आदेश दिया। भरत मुनि ने गंधर्व अप्सराओं के माध्यम से नटराज शिव के सामने पहला नाटक किया। तब शंकर ने भरतमुनि को सुझाव दिया कि प्रयोग की सुंदरता बढ़ाने के लिए उनके नृत्य को भी नाटक में शामिल किया जाना चाहिए और तदनुसार भरतमुनि ने अपने शिष्य तंदू के माध्यम से पौरुष तांडव नृत्य और देवी पार्वती के माध्यम से सुकुमार नृत्य लास्य सिखाया। भारत में धर्म, दर्शन और कला का अटूट संबंध है। धर्म, दर्शन और कला को जीवन में सच्चा सुख या मोक्ष प्राप्त करने का साधन माना जाता है। भक्ति के मार्ग को बढ़ावा देने के लिए भारतीय संतों ने कविता, गायन और नृत्य का उपयोग किया। मंदिर पहले के समय में एक प्रमुख सांस्कृतिक केंद्र था। गायन, वादन और नृत्य की कलाओं का आविष्कार भगवान की पूजा के प्रमुख अंग के रूप में यहीं हुआ था। देवश्रय के साथ-साथ भारतीय नृत्य कला का विकास हुआ।

नृत्य संगीत

इस शब्द को वास्तव में दो श्रेणियों में विभाजित किया जाना चाहिए, नृत्य के लिए संगीत और नृत्य के साथ आने वाला संगीत। यह चार कलाओं में से एक है और भावनाओं से निकटता से संबंधित है। आजकल टीवी के जरिए डांस फॉर्म घरों तक पहुंच गया है। नटराज से हमें नृत्य की समृद्ध विरासत मिली है। इस क्षेत्र में मंच प्रस्तुति महत्वपूर्ण है। परिश्रम, परिश्रम और साधना से आप प्रसिद्धि प्राप्त कर सकते हैं। युवा पीढ़ी अब इस क्षेत्र की ओर बड़े पैमाने पर मुड़ गई है। बोली जाने वाली भाषा के विकसित होने से पहले शारीरिक भाषा का विकास हुआ। इसमें आंखों के भाव, शरीर की हरकतें और गैर-मौखिक संकेत शामिल हैं जो हमारी बुनियादी मानवीय भाषा हैं। इसलिए, संचार उपकरण मनुष्यों के लिए संभव हो गए हैं भले ही वे भाषा नहीं समझते हों। नृत्य न केवल संगीत की ताल पर की जाने वाली एक लयबद्ध शारीरिक गति है बल्कि इसमें नौ रस या भाव भी होते हैं। बाद के विद्वानों ने कहा है कि शांत नौवां रस है और इसकी शांति स्थायी पहलू है। इसका अर्थ है कि नृत्य शारीरिक और मानसिक दोनों स्तरों पर प्रभावी ढंग से काम करता है। नृत्य शर्म को कम करता है और आत्मसम्मान में सुधार करता है। इससे लोगों के सामने बोलने का आत्मविश्वास बढ़ता है। नृत्य से व्यायाम के मानसिक और शारीरिक लाभ भी होते हैं। जैसे-जैसे मांसपेशियां मजबूत होती हैं, हृदय की शक्ति बढ़ती है, जबकि संगीत की ताल पर नृत्य करने से शरीर का संतुलन बना रहता है। चेहरे के भाव चेहरे की मांसपेशियों का व्यायाम करते हैं।

नृत्य में संगीत का स्थान

नृत्य शिक्षा की शुरुआत एक सुंदर छंद से होती है-"यतौ हस्तः ततौ दृष्टिः यतौ दृष्टिः ततौ मनः" अर्थात् अंतरिक्ष में शरीर की स्थिति, उस पर दृष्टि का नियंत्रण, उस पर मन की एकाग्रता, सभी विकसित करने में मदद करते हैं। त्रि-आयामी ज्ञान। नृत्य का अभिन्न अंग संगीत है। संगीत शिक्षा नृत्य शिक्षण की पूरक होनी चाहिए। शरीर स्वाभाविक रूप से संगीत की लय का अनुसरण करता है। संगल और नृत्य के इस मुक्त आविष्कार को बचाए रखा जाना चाहिए। उसका फूलना-फलना चाहिए, निःसंदेह संगीत उसके अनुकूल होना चाहिए।

निष्कर्ष

संगीत और नृत्य एक-दूसरे के पूरक हैं और दोनों मिलकर कला की अभिव्यक्ति को और अधिक प्रभावशाली बनाते हैं। नृत्य की गति, भाव-भंगिमाएँ, और लय संगीत के सुर, ताल, और भावनाओं के अनुरूप होती हैं। बिना संगीत के नृत्य अधूरा लगता है, और नृत्य के बिना संगीत की भावनात्मक गहराई को पूरी तरह से महसूस करना कठिन हो सकता है। इतिहास और संस्कृति में दोनों का गहरा संबंध देखा जाता है—चाहे वह भारतीय शास्त्रीय नृत्य हो, जिसमें संगीत राग और ताल पर आधारित होता है, या फिर पाश्चात्य बैले, जिसमें संगीत और नृत्य का समन्वय अद्भुत रूप से होता है। धार्मिक अनुष्ठानों, सांस्कृतिक उत्सवों, और मनोरंजन के विभिन्न माध्यमों में दोनों का संगम देखने को मिलता है। अतः, संगीत और नृत्य न केवल सौंदर्य और आनंद के स्रोत हैं, बल्कि वे समाज, परंपराओं, और मानवीय भावनाओं को जोड़ने वाले महत्वपूर्ण साधन भी हैं। इनका संतुलित और समन्वित रूप हमें एक गहरी भावनात्मक और सांस्कृतिक अनुभूति प्रदान करता है।

संदर्भ ग्रंथ

1. डॉ. नारायण मंगरूळकर, संगीत विजयनी शास्त्र, स्वरसंपदा प्रकाशन नागपूर
2. नृत्य विकिपीडिया, <https://mr.m.wikipedia.org>
3. संगीत कलाविहार-गंधर्व मंडळ, मुंबई
4. संगीत विशारद-वसंत, हाथरास प्रकाशन
5. गुरु दधिच, कथक नृत्य शिक्षा (भाग १ व २) –
6. के. नारायण काळे, प्रतिमा रुपरंग, नूतन प्रकाशन
7. वाचस्पती गैरोला, भारतीय नाट्य परंपरा और अभिनयदर्पण।